Living Utopias-

उद्योगवाद के विकल्प की आशा भरी उदाहरण/कहानिया :

इस 6 दिन के संछिप्त आवासिक कार्यशाला के दो प्रमुख उद्देश्य है

क) सारे विश्व मे उद्योगवाद के भयानक संकट से झूझने की आवश्यकता को समझना

ख) सभ्यता के हरेक पहेलु मे उद्योगवाद के जो विकल्प उभर कर आ रहे हैं --- आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, तकनीकी, शिक्षा, और परिवेश ---- उनको समझना , उनसे सीखना , और अपने कार्यछेत्र मे परीक्षा करके देखना।

हम सारी दुनिया से ऐसे जीते जागते उदाहरण को लेकर चर्चा करेंगे , जिनको हम वास्तव मे अपना सकते हैं। आशा रखते हैं की इससे हम सबका हौसला बढ़ेगा कि हम सब मिलकर एक ऐसी विकल्प दुनिया और अच्छा समाज बना सकते हैं जहां **प्रकृति को ध्वंश किए बिना हर व्यक्ति पूरी तरह से विकसित हो।**

कार्यशाला सहायक:सुजीत सिन्हा ,पल्लवी वर्मा पाटिल, अज़ीम प्रेमजी यूनिवरसिटि, बंगलोरे

भूमिका

अङ्ग्रेज़ी शब्द डेव्लपमेंट उद्योगवाद के विस्तार का ही एक और नाम है। इस उद्योगवाद का प्रधान उद्देश्य है मनुष्य के उपभोग को निरंतर बढ़ाते रहने के लिए जल्दी से जल्दी प्रकृति को निचोड़ कर ज्यादा से ज्यादा धन संपद का उत्पादन करते रहना । इसके लिए चाहिए बड़े पैमाने के विज्ञान-तकनीकी का उत्तम व्यवहार। इसको ठीक से संचालित करने के लिए शक्तिशाली राष्ट्र और तमाम बड़ी कंपनिया की विशेष भूमिका है। और इन सबके लिए व्यक्तिवाद , सब कुछ का बाजारीकरन और विशाल पैमाने पर पृथ्वी-व्यापी व्यापार। पिछले तीस सालों के इन्फॉर्मेशन तकनीकी ने इस **भोगवाद के अनंत सीडियों को चढ़ने कि आकांशा** पृथ्वी के लगभग हर मनुष्य तक पहुंचा दिया है। और नतीजा ? पूरे

पृथ्वी के एकोलोजी ध्वंश होने के मुह पर , चारो ओर भयानक आर्थिक अ-समानताए और हताशा, राजनैतिक व्यवस्थाओं की बढ़ती नाकामी , सामाजिक - सांस्कृतिक विनाश , और पूरे प्रथवि मे निरंतर बढ़ती हिंसा और असहिष्णुता ।

पिछले करीब चालीस-पचास वर्षो से विकास के अंतर्गत न्याय -समता - निरंतरता (सस्तेनेबिलिटी) लाने के प्रयास मूलतः दो प्रकार के हुए हैं :

एक तो जो उद्योगवाद के ही अंतर्गत हैं , जैसे "मानव विकास सूचकांक (Human Development Index HDI) , सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (Millennium Development Goals MDGs), सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals SDGs), हरा विकास (Green Growth) ।

और दूसरा जो मानव सभ्यता के हर पहेलु मे (आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, तकनीकी, शिक्षा, और परिवेश) **उद्योगवाद को ही नकारते हैं** ।पर आज भी उद्योगवाद तेजी से फैल रहा है, उसके जरिये आए हुए घमासान संकट और भी बढ़ते जा रहे हैं, इनके विकल्प समाधान अभी तो बहुत सीमित पैमाने मे हैं। अगर संकटों की रफ्तार समाधानो से बहुत ज्यादा रही , तो मानव सभ्यताओं का ध्वंश हो जाएगा , जैसा कि पूरे पृथ्वी मे जगह जगह पिछले 4000 वर्षो मे बहुत बार हो चुका है। पर इस बार लगता है कि सारे विश्व के सभी सभ्यताए विनष्ट हो जाएंगी।

पर सारे विश्व मे आशा भरी बातें भी हो रही है । उद्योगवाद के विरुद्ध कुछ पुराने विचारधाराएँ थी : भारतवर्ष मे गांधी और टागोर के सपने , यूरोप मे एनर्किस्म / अराजकतावाद , अफ्रीका मे उबुंतु , लातिन अमरीका मे बूएन विविर। और आज इस भयानक संकट के कारण नई धारनाए आ रही हैं ---यूरोप मे डीग्रोथ/ आर्थिक घटाव , भारत मे रैडिकल एकोलोजिकल डेमॉक्रसि, लातिन अमरीका मे प्रकृति के अधिकार इत्यादि। आज ये तरह तरह के विकल्प आपस मे नेटवर्क बना रहे हैं इस विध्वंष्कारी डूबते हुए उद्योगवाद से बचने के लिए। ये आशा रखते हुए कि समाधान उभर के आएंगे और ऐसे फैलेंगे कि हम बच जाएंगे।

आपलोग का स्वागत है हमारे साथ एक दूसरे मंजिल की यात्रा मे शामिल होने के लिए : एक ऐसी पृथ्वी कि तरफ जो कि भिन्न तरह के **गाँव और शहरो (राष्ट्रों से नहीं)** से बना हो । जिन ग्रामीण और शहरी बस्तियों मे न्याय, समानता , सुस्वास्थ्य, खुशहाली , शांति, सृजनशीलता, भाईचारा ही प्रधान सूचक होंगे। और जो स्वयमसंपूर्ण, स्वशासित, इको-सास्टेनेबल होने कि तरफ बढ़ेंगे।

Detailed day wise agenda

Day 1: Visions and frameworks of alternatives to Industrialism	The CRISIS	Gandhian vision Tagore's vision		De-Growth	Radical Ecological Democracy *RED* Alternate Transformation Framework	Indigenous visions Ubuntu Buen Vivir
Day 2: Alternate imaginations of Economy	Case study on Detroit: many aspects of solidarity economy including urban farming	Case Study of Mondragon	Solidarity Economy : Non-market exchanges of goods and services	Case study on Kuthambakam : towards self sufficient gram panchayat	Community Supported Agriculture CSA / Producer Consumer Cooperation	LETS (local currency) case studies
Day 3: Alternate imaginations of Technology	*Reflections on Unit 2*	Appropriate Technology: Kumarappa, Schumacher, historical perspective and future.	Renewable Energy Community Gobar Gas and solar energy	Water: Rain water harvesting ; open wells	Vernacular Housing	Pedal Power : Various possibilities
Day 4: Alternate imaginations of Democracy	*Reflections on Unit 3*	Mendha Lekha Village participatory consensual democracy	Rights of Nature Equador, Bolivia , New Zealand	Arvari Sansad River Parliament Eco-Regional democracy :	Rojava Movement, Syria Anarchism in action :	Urban participatory governance : Innovations from India and world :
Day 5: Alternate imaginations of Society and Culture	*Reflections on Unit 4*	The Amish- fairly large community in hundreds of villages who have rejected industrialism	Kibbutz of Israel	Education for the Future	Zapatistas in Mexico : Their Open Learning centres	Film screening
Day 6 : Reflections and way forward	*Reflections on Unit 5*	Recap of Frameworks	Some thoughts on strategies	Reflections by participants on how to carry these ideas forward		